



जनजाति जीवन कौशल : बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में

1. रीता अनिल कुमार, शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
2. डॉ. गौरी शर्मा, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

सार :

प्रस्तुत शोध पत्र 'जनजाति जीवन कौशल: बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में' का प्रमुख उद्देश्य बैगा समुदाय में निहित विभिन्न जीवन कौशलों की पहचान, उसका अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड के अंतर्गत आनेवाले ग्राम करका के अंतर्गत नक्काबांधा टोला में निवासरत बैगा समुदाय का चयन किया गया है। नक्काबांधा टोला में 62 बैगा परिवार निवासरत हैं। अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वयं समुदाय के बीच रहकर 06 माह का समय बिताया गया है। आंकड़ों का संकलन सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के दौरान जनजाति समुदाय में विभिन्न जीवन कौशलों जैसे आत्मजागरूकता, समस्या समाधान, निर्णय करना, भावनात्मक संतुलन, नेतृत्व की क्षमता, परस्पर संबंध, आलोचनात्मक अथवा महत्वपूर्ण सौच, सृजनात्मक सौच की पहचान की गई। अध्ययन में यह पाया गया कि इन जीवन कौशलों के माध्यम से बैगा समुदाय के लोग अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना आसानी से कर पाते हैं। यद्यपि वर्तमान परिस्थितियों में कुछ भटकाव की स्थिति बन रही है, जिससे उन्हें बचाने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना:

जीवन कौशल योग्यता को मनोसामाजिक योग्यता भी कहा जाता है। जीवन कौशल किसी व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने और अपनी संस्कृति और पर्यावरण के बीच अनुकूलन और सकारात्मक व्यवहार को बनाये रखने की क्षमता प्रदान करते हैं। जीवन कौशल का विकास आजीवन चलनेवाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को दिन पर दिन अधिक परिपक्व बनाती है उसके साथ उन्हें अनुकूलनशील, जिम्मेदार और आत्म जागरूक भी बनाती है। जिससे वे भविष्य में आनेवाली समस्याओं का सामना आसानी से कर पाते हैं। जीवन कौशल व्यक्ति को अपनी भावनाओं पर

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
<p>Dr. Gouri Sharma Asst. Professor, Department of Education, Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha, Maharashtra E-mail: drgourisharma23@gmail.com</p>	

जनजाति जीवन कौशल : बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में

नियंत्रण, निर्णय निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मजागरूकता, आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच, सामाजिक सकारात्मक व्यवहार एवं परस्पर संबंधों का निर्वहन करना सिखाते हैं।

जीवन कौशल दो प्रकार के होते हैं। ज्यादातर जीवन कौशल जन्मजात होते हैं और कुछ जीवन कौशल व्यक्तिगत शिक्षा, अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से अर्जित किये जा सकते हैं। जन्मजात जीवन कौशल में बड़ों के लिए सम्मान, निकटतम संबंधियों के लिए चिंता और माता-पिता की आज्ञा का पालन करना शामिल है। जन्मजात कौशल व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का सामना करने में और स्थितियों के साथ संतुलन बनाने में समर्थ बनाते हैं। अर्जित जीवन कौशल की शिक्षा व्यक्ति दूसरों से प्राप्त करता है (थॉमस कलम, 2020)।

जीवन कौशल, व्यक्ति में बुनियादी शिक्षा, लैंगिंग समानता, अच्छे नागरिक, आजीवन शिक्षा, जीवन की गुणवत्ता तथा शांति को बढ़ावा देने में योगदान देते हैं। बच्चों में बचपन से ही जीवन कौशल विकसित करने से बच्चों भविष्य के लिए तैयार होते हैं साथ ही उनमें नेतृत्व के गुण, अनुकूलन, आत्मविश्वास और सहानुभूति, समानुभूति, निर्णय क्षमता जैसे कौशलों के विकास से वे जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आप को संतुलित रख पाते हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण, सूचना और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण बढ़ती परस्पर प्रतिस्पर्धा ने व्यक्तियों के विशेष कर युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाला है। युवाओं में बढ़ती नशा प्रवृत्ति, हिंसा, अभिभावक का विरोध, शैक्षिक और व्यक्तिगत तनाव के कारण युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। जिसका प्रमुख कारण युवाओं में जीवन कौशलों का अभाव है। उन्होंने पढ़ लिख कर डिग्रियाँ तो हासिल कर ली हैं किन्तु व्यावहारिक जीवन की कठिनाइयों से जूझना उन्हें नहीं आता है, उनमें निर्णय की क्षमता नहीं है, भावनाओं का संतुलन भी नहीं है, और न ही वे अपनी बातों को स्पष्ट रूप से लोगों के सामने प्रभावी ढंग से रख पाते हैं अर्थात् उनमें संवाद कौशल भी नहीं है। अतः किशोरों में इन समस्याओं का समाधान करना अतिआवश्यक है। किशोरों में जीवन कौशलों के माध्यम से सामाजिक दक्षता को बढ़ावा देने के साथ उन्हें दैनिक चुनौतियों से लड़ने में सक्षम बनाना आवश्यक है (भरत एवं कुमार, 2016)। जिसके लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO, 1997) के अनुसार जीवन कौशल “अनुकूली और सकारात्मक व्यवहार की क्षमताएँ हैं, जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में समर्थ बनाती हैं।” जीवन कौशल की यह परिभाषा विश्वभर में स्वीकार की गई है विश्व स्वस्थ संगठन ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि जीवन कौशल कि परिभाषाएँ अनेक हो सकती हैं। यूनिसेफ ने जीवन कौशल को “एक व्यवहार परिवर्तन या व्यवहार विकास दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है जो तीन क्षेत्रों : ज्ञान दृष्टिकोण और कौशल के संतुलन को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है”। संक्षेप में जीवन कौशल वे व्यक्तिगत योग्यताएँ हैं जो हमें जीवन की चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने तथा सफल और संतोषजनक जीवन जीने में हमारी मदद करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी शिक्षार्थियों को महत्वपूर्ण जीवन कौशल प्रदान करने की सिफारिश करती है। साथ ही समग्र और बहु विषयक शिक्षा प्रणाली को ध्यान में रखते हुए लचीले, नवीन, क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और परियोजनाओं की अनुशंसा भी करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के युवाओं को भारत देश की विविध संस्कृति, सामाजिक और तकनीकी आवश्यकताओं के साथ ही ज्ञान, परम्परा, भाषा और कला के साथ राष्ट्रीय गौरव, आत्मज्ञान, आत्मविश्वास, परस्पर सहयोग और एकता की पहल करती है (UGC करिकुलम एंड गाइडलाइन्स फॉर लाइफ स्किल 2.0)।

जनजाति जीवन कौशल : बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 10 प्रमुख जीवन कौशलों की पहचान की है जिसमें 1-आत्म जागरूकता 2- परानभूति 3- आलोचनात्मक या महत्वपूर्ण सोच 4- रचनात्मक सोच 5- परस्पर संबंध 6- निर्णय निर्माण 7- समस्या समाधान 8- प्रभावी संचार 9- भावनाओं का प्रबंधन 10- तनाव से निपटना (विश्व स्वास्थ्य संगठन,1997) शामिल है।

1-आत्मजागरूकता -आत्मजागरूकता से आशय स्वयं की पसंद, नापसंद, इच्छाओं, सामर्थ्य, शक्तियों और कमजोरियों को पहचानना और अपने महत्व को समझना है। जीवन की उन वास्तविकताओं को पहचानना और स्वीकार करना है, जिन्हे बदला नहीं जा सकता है।

2- परानभूति -परानभूति दुसरे के प्रति सहानभूति न रखकर अपने आप को उस व्यक्ति के स्थान पर रखकर स्थिति को देखने और समझने का सामर्थ्य है।

3- आलोचनात्मक या महत्वपूर्ण सोच- आलोचनात्मक सोच जानकारी और अनुभवों का वस्तुनिष्ठ तरीके से विश्लेषण करने की क्षमता है। आलोचनात्मक सोच हमें उन कारकों को पहचानने और उनका आकलन करने में मदद करती है जो हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करते हैं, जैसे मूल्य, साथियों का दबाव और मीडिया और हमें स्वस्थ रहने में योगदान दे सकती है।

4- परस्परसंबंध -परस्पर संबंध कौशल में सौहाद्रपूर्ण संबंध बनाने का सामर्थ्य शामिल है। यह कौशल हमें एक दूसरे के साथ सकारात्मक तरीके से जुड़ने में सहायता करता है।

5-रचनात्मक सोच -चीजों को करने और देखने का नया तरीका है। रचनात्मक सोच किसी भी स्थिति में उचित प्रकार से सोचने लाभ और हानि का आँकलन करने की क्षमता है। यह क्षमता उचित तरीके से समस्याओं के समाधान रचनात्मक सोच चीजों को देखने या करने का एक नया तरीका है जिसमें चार घटक शामिल है - प्रवाह (नए विचारों को उत्पन्न करना), लचीलापन (दृष्टिकोण को आसानी से बदलना), मौलिकता (कुछ नया सोचना) और विस्तार (अन्य विचारों का निर्माण करना)।

6-निर्णय लेना– निर्णय लेने से पहले आवश्यक है कि हम लिए जाने वाले निर्णय की प्राथमिकता, समझ और परिणामों के बारे में जाने। निर्णय लेना एक ऐसी योग्यता है जो समस्त उपलब्ध सूचनाओं के जरिये किसी स्थिति का आँकलन करने लाभों और हानियों का विश्लेषण कर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

7-समस्या समाधान – समस्या का समाधान कठिन या चुनौतीपूर्ण स्थितियों का पता लगाने उनका सामना करने और उनका समाधान ढूँढने का सामर्थ्य है। समस्या समाधान की क्षमता हमें अपनी समस्याओं से रचनात्मक ढंग से निपटने में सक्षम बनाती है। ऐसी समस्या जो अनसुलझी होती है मानसिक और शाररिक तनाव का कारण बनती है। समस्या समाधान एक महत्वपूर्ण कौशल है।

8- प्रभावी संचार- प्रभावी संचार के द्वारा हम अपने विचारों को मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। प्रभावी संचार कौशल हमें प्रतिदिन के अनेक मुद्दों को सुलझाने और अपने व्यक्तिगत संबंधों को सुधारने में मदद करता है।

9 – भावनात्मक संतुलन -हर एक व्यक्ति प्रसन्नता, खुशी,प्रेम,उदासी, क्रोध, इर्ष्या जैसी भावनाओं से गुजरता है। अनेक भावनाओं के बीच संतुलित व्यवहार ही भावनात्मक संतुलन है। आज युवा पीढ़ी में भावनात्मक संतुलन की बहुत कमी देखी जा रही है। जीवन में न सुनने की आदत नहीं है आर्थिक या अन्य कोई भी कमी उसे स्वीकार नहीं फलतः वह गलत रास्ते पर जा रही है।

10- तनाव से निपटना -तनाव शारीरिक , भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्पन्न होता है। मनुष्य की शारीरिक , मानसिक, सामाजिक , आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से उसे तनाव होता है, उसे समाज में सम्मान न मिले यह भी तनाव का बड़ा कारण हो सकता है। पारिवारिक समस्या, दोस्तों से अनबन, बेरोजगारी, परीक्षा का दबाव , परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु इत्यादि तनाव के प्रमुख कारण हैं। आज युवा पीढ़ी तनाव से निपटना नहीं जानती है, और आत्महत्या जैसे अपराध भी कर बैठती है। जीवन कौशल हमें जीवन जीने का तरीका सिखाते हैं और विपरीत परिस्थितियों से निपटना भी सिखाते हैं।

जनजाति जीवन कौशल :

बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के मध्यवर्ती क्षेत्र में पाई जाती है जो मुख्यतः बिलासपुर जिले में कोटा और तखतपुर विकासखंड, गोरेला -पेंड्रा मरवाही जिले में गोरेला विकासखंड , कबीरधाम जिले में बोडला और पंडरिया विकासखंड , कोरिया जिले में मनेन्द्रगढ़ विकासखंड एवं राजनांदगांव जिले में छुईखदान और लोरमी विकासखंड के ग्रामों में निवास करती है। इनकी सर्वाधिक आबादी बिलासपुर , मुंगेली और कबीरधाम जिलों में पाई जाती है। बैगा जनजाति की धीमी विकास गति को देखते हुए भारत सरकार ने इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति का दर्जा दिया है। वर्ष 2015-16 में (TRTI) किये गए सर्वेक्षण के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में इनकी आबादी 89,765 है। बैगा जनजाति जंगलों से औषधीय पौधे , जड़ी-बूटी खोजने में माहिर है। उनकी बुनियादी जरूरतें और आजीविका वनों से जुड़ी हुई है। बैगा जनजाति मुख्यतः जंगलों से कंद , सब्जी , फल-फूल को एकत्र करने , शिकार करने , मछली पकड़ने , बांस से टोकरी , सूप , झाड़ू बनाने का कार्य करती है। बैगा जनजाति की जीवनशैली प्रकृति के अनुरूप है तथा उनमें विद्यमान जीवन कौशल सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतीक हैं। बैगा समुदाय प्रकृति से जो भी मिलता है उसे आपस में बांटकर लेते हैं और जितनी आवश्यकता है उतना ही जरूरत के अनुसार प्रकृति से लेते हैं। यह समुदाय मुसीबतों से घबराता नहीं है। बैगा समुदाय की संस्कृति सामुदायिक एकता का प्रतीक है। परस्पर संबंध, भावनात्मक संतुलन और महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान , सामूहिक निर्णय क्षमता तथा भावनात्मक जुड़ाव जैसे जीवन कौशल दैनिक समस्याओं से जूझने में इनकी मदद करते हैं तथा इनके जीवन को सहज व सरल बनाते हैं।

यद्यपि इनमें शिक्षा का स्तर निम्न है किन्तु इनमें जीवन कौशल की कमी नहीं है। यद्यपि औपचारिक शिक्षा का स्तर निम्न है किन्तु परंपरागत शिक्षा इन्हे जीवन मूल्यों और विभिन्न जीवन कौशलों में दक्ष बनाती है। डब्लू एच.ओ.द्वारा बच्चों में जीवन कौशल विकास की आवश्यकता को देखते हुए 10 महत्वपूर्ण जीवन कौशलों की बात की गई है, जिनके विकास हेतु विद्यालयीन स्तर पर लचीले पाठ्यक्रम भी तैयार किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बच्चों में जीवन कौशल विकास की सिफारिश एवं लचीले क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रमों की अनुशंसा करती है। प्रस्तुत पत्र के माध्यम से डब्लू एच.ओ.द्वारा बताए गए 10 महत्वपूर्ण जीवन कौशलों की जनजाति संदर्भ में पहचान कर उन्हें प्रस्तुत किया गया है।

आत्म जागरूकता -बैगा समुदाय के व्यक्तियों में आत्मजागरूकता देखी गई है। इस समुदाय में व्यक्ति अपनी शक्तियों और कमियों को जानते हुए अपना जीवन जीते हैं। समुदाय में ही रहने वाले बैगा जो कि शारीरिक रूप से तो कमजोर हैं किन्तु वे अपनी शक्तियों को बखूबी पहचानते हैं। उन्हें जड़ीबूटी का ज्ञान है। उनके पास दूर दूर के गाँव से बीमारियों का इलाज कराने लोग आते हैं। इस प्रकार शारीरिक रूप से कमजोर होते हुए भी मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर और तनाव से दूर तंत्र मंत्र और औषधीय ज्ञान से सभी का इलाज करते हैं। उन्होंने समुदाय में अपनी एक पहचान बना रखी है। इसी

तरह गाँव में एक अन्य बैगा बुजुर्ग नेत्रहीन महिला दिखाई दी जो कि नेत्र हीन होकर भी अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर दिनचर्या के सभी कार्यों को सामान्य ढंग से करती है तथा सामाजिक उत्सव, विवाह आदि में शामिल होकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करती है। अध्ययन क्षेत्र में महिला को विवाह की सभी रस्मों में शामिल होते हुए तथा टिकावन में वर वधु को आशीर्वाद देते हुए भी देखा गया।

इसी प्रकार गाँव में रहने वाले अन्य बैगा दम्पती जिनकी उम्र 35 -40 वर्ष है। उनके घर जाने पर बैगा पुरुष को खाना बनाते हुए देखा गया। पूछने पर ज्ञात हुआ कि पत्नी को मासिक धर्म से है और मासिक धर्म के दौरान समुदाय में कोई भी स्त्री 7 दिनों तक भोजन नहीं बनाती है। इन सात दिनों में बैगा पुरुष द्वारा ही भोजन बनाया जाता है। बातचीत के दौरान बैगा दम्पती से बच्चों के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि उनके दो बच्चे थे जो बीमारी के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए उसके बाद उन दम्पती की कोई संतान नहीं हुई है। इस वास्तविकता को सहजता से स्वीकार करते हुए वे आज सामान्य तरीके से अपना सामुदायिक जीवन जी रहे हैं। आप बीती बताते वक्त दम्पती में जरा भी तनाव देखने को नहीं मिला।

परानुभूति :

अध्ययन क्षेत्र में समुदाय में परानुभूति का भाव दिखाई देता है। समुदाय में सभी व्यक्ति एक दुसरे के दुःख और सुख में शामिल होते हैं। समुदायके लोग समुदाय के किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उस व्यक्ति के घर में जाकर मात्र सहानुभूति व्यक्त नहीं करते बल्कि उस दुःख को महसूस करते हुए प्रत्येक रीति रिवाज को सम्पन्न करने में अपना सहयोग भी देते हैं एवं प्रत्येक रीति रिवाज में शामिल भी होते हैं। समुदाय में देखने को मिला कि एक बैगा बुजुर्ग महिला की मृत्यु के दौरान सभी समुदाय के पुरुष बैगा उसके मृत्यु संस्कार में शामिल हुए तथा बुजुर्ग महिला को दफ़नाने के बाद सभी एक साथ नदी में स्नान किए एवं तीज नहावन एवं दसनहावन तक समुदाय के लोग सभी मृत्यु संस्कार की सभी क्रियाविधि में शामिल भी हुए थे। उसी तरह विवाह संस्कार में समुदाय के केवल एक बैगा की बेटी का विवाह नहीं होता है समुदाय में सभी उसे अपनी बेटी मानकर उसके विवाह में शामिल होते हैं। समुदाय के बैगा बोलते हैं कि हमारे समाज घर की बेटी का विवाह है और विवाह के दिन सभी समुदाय के लोग मिलकर वर -वधु को आशीर्वाद देते हैं। समुदाय में एक बैगा सदस्य का घर टूट जाने पर सभी समुदाय के लोग मिलकर उसे दूसरे ही दिन पुनः बना देते हैं।

आलोचनात्मक सोंच /महत्वपूर्ण सोच:

महिलाओं का सम्मान बैगा समुदाय में महिलाओं को अपना वर चुनने का अधिकार होता है। अगर कोई महिला शादी से पहले अपने प्रेमी के नाम की मुनरी अपने हाथ में पहन ले तब विवाह के बाद भी उसका साथी उसे निकालने के लिए नहीं बोलता है। उसकी भावनाओं का सम्मान करता है। बैगा समुदाय की महिलाएं व्यक्तिगत निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होती हैं, चाहे वह वर का चुनाव हो या पति की मृत्यु के बाद पुनः विवाह करने का, यह निर्णय उनका अपना होता है। समाज या परिवार द्वारा उन पर दबाव नहीं डाला जाता है। अध्ययन क्षेत्र में बैगा महिला से हुई बातचीत से पता चला कि उसके पति की मृत्यु हुए कई वर्ष हो गए हैं। उस महिला ने दो साल पहले गाँव में ही रहने वाले बैगा पुरुष से दूसरी शादी की है। उस महिला ने बताया कि यह विवाह उसकी इच्छा व सहमति से हुआ है। उसी प्रकार समुदाय में जिस लड़की के विवाह में शोधार्थी शामिल हुई उससे भी बातचीत के दौरान पता चला कि वह विवाह लड़की के द्वारा चुने हुए वर से ही हो रहा है। बैगा समुदाय में लड़का - लड़की में भेद नहीं किया जाता है। समुदाय में दोनों को बराबरी का

स्थान है। समुदाय में देखने को मिला कि किसी बैगा दम्पती के यहाँ सिर्फ बेटी होती है तो वह अपने दामाद को अपना बेटा मानकर उसे अपने घर में रख लेते हैं या वृद्धावस्था में अपनी बेटी के घर जाकर रहते हैं। अगर समुदाय में कोई बुजुर्ग दम्पती की संतान नहीं है तो समुदाय के लोग मिलकर उनकी देखरेख, भरण पोषण करते हैं। इसी प्रकार गाँव के प्राथमिक स्कूल में मेरी मुलाकात 10 वर्षीय बालिका से हुई बात करने पर पता चला कि एक दुर्घटना में उसके माता - पिता की मृत्यु हो गई है और अब वह अकेली है किन्तु समुदाय में देखने को मिला कि 10 वर्षीय बालिका के माता - पिता की मृत्यु के पश्चात् समुदाय के लोगों उसे समुदाय की बेटी मानते हुए उसका पालन पोषण कर रहे हैं। उस बालिका को अनाथ आश्रम में नहीं छोड़ा गया है और वह बालिका भी समुदाय के लोगों के साथ प्रसन्नचित्त है। बैगा समुदाय जीवन की कठिन विपरीत परिस्थितियों में भी भीख नहीं मांगता अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं जीवन की विभिन्न कठिनाइयों समस्याओं का सामना करने का कौशल उनके पास होता है। समुदाय में एक दुसरे का साथ नहीं छोड़ते हैं। मछली पकड़ना हो या शिकार पर जाना, जंगल से साग सब्जी, कंद जो भी लाना हो समुदाय के युवा, बच्चे, बुजुर्ग या महिला एक समूह में ही जाते हैं और जो भी चीज लेकर आते हैं उसे आपस में बाटकर ही लेते हैं। समुदाय के किसी भी सदस्य में व्यक्तिगत लाभ का भाव दिखाई नहीं देता है। कोई बैगा अपने लिए नहीं सोचता सभी समुदाय के लिए सोचते हैं। समुदाय का यह स्वभाव उनकी महत्वपूर्ण सोच को दर्शाता है।

प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता - बैगा समुदाय के बैगा बताते हैं कि उनके लिए प्रकृति भगवान का दिया हुआ अमृत है। प्रकृति उन्हें सब कुछ देती है वह उसे हानि नहीं पहुँचाएंगे। बैगा समुदाय पेड़-पौधों में देवी - देवताओं का वास मानकर उनकी पूजा करते हैं। और उनकी सुरक्षा अपने बच्चों की तरह करते हैं। उनसे कुछ भी लेते समय कृतज्ञता ज्ञापित करना नहीं भूलते। वे कभी भी वनों में आग नहीं लगाते हैं। प्रकृति से आवश्यकता से अधिक कुछ भी नहीं लेते हैं जो भी लेते हैं उसे भी आपस में मिल बाटकर उपयोग करते हैं। प्रकृति से कुछ भी लेते समय उनके प्रति कृतज्ञता का भाव उनमें कूट कूटकर होता है। घर के पास अपनी आवश्यकता के अनुरूप धान, फलों के पेड़, मौसमी सब्जी भाजी, तिल, कोदो, मक्का, खीरा इत्यादि लगाते हैं किन्तु पशु पक्षियों के प्रति संवेदनशील है उनके द्वारा बाड़ी में घुस कर खा लेने की चिंता नहीं करते और न ही उन्हें मारकर भगाते हैं।

4 परस्पर संबंध- बैगा जनजाति समुदाय में परस्पर संबंध बहुत मजबूत है। समूह में कोई भी कार्य हो सभी मिलकर करते हैं। समुदाय में परस्पर संबंध संस्कृति, तीज, त्यौहारों में दिखाई देते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार समुदाय के समस्त लोग मिलकर एक साथ करते हैं और उसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य होती है। बैगा समुदाय में विवाह में देखा गया कि वर पक्ष से वधु पक्ष के यहाँ फलदान लेकर दो लोगों को भेजा जाता है जिनहे सुहासा (चुलिहा) कहा जाता है, फलदान पहुँचाने के अलावा उन्हें वधु पक्ष की विवाह कार्य में सहायता के लिए भेजा जाता है और वे दोनों विवाह कार्य में वधु पक्ष की सहायता करते हैं। समुदाय के सभी लोग भी मिलकर विवाह कार्य में सहायता करते हैं। वधु को सभी समुदाय के लोग अपनी बेटी मानते हैं। सभी रस्मों में शामिल होने के लिए समुदाय के लोगों को बुलावा दिया जाता है। जब तक सभी नहीं आ जाते विवाह की रस्मों की शुरुवात नहीं होती है।

समुदाय में हरेली की पूजा हो या अक्की का त्यौहार पूजा करके सबसे पहले प्रसाद समुदाय के लोगों को वितरित किया जाता है उसके पश्चात् ही स्वयं उसका सेवन करते हैं। इस तरह सभी त्यौहार समुदाय के सभी सदस्य एकजुट होकर त्यौहार मनाते हैं। गाँव में ही रहने वाले बैगा से सामान्य बातचीत के दौरान यह बात सामने आई कि समुदाय में कहीं भी किसी भी बैगा परिवार या उनके गोत्र में व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर व्यक्तिगत पहचान ना होने के बावजूद भी उस बैगा

परिवार को अपने परिवार का सदस्य मानकर वे उसके मृत्यु संस्कार में शामिल होते हैं और अपने बाल भी बनवाते हैं। समुदाय के सभी सदस्यों के लिए यह शोक होता है। जो भी सदस्य सामाजिक कार्य में शामिल नहीं होता उसे समाज को दंड भरना पड़ता है।

मछली पकड़ना और जंगल से फल फूल एकत्र करना हो तो समुदाय में कोई अकेले नहीं जाता है। कहीं भी जाना हो समूह में ही जाते हैं, और जो भी मिलता है उसे आपस में बांट लेते हैं। दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की चिंता व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक रूप से करते हैं। यही सामूहिकता की भावना समुदाय में नयी पीढ़ी में भी देखने को मिलती है। समुदाय के छोटे बच्चे भी समूह में जंगली फल एकत्र करते हैं और किशोर बच्चों गुल्ले हाथ में लिए समूह में पशु-पक्षी का शिकार करते नजर आते हैं।

5 निर्णय निर्माण - समुदाय में बड़े बुजुर्ग द्वारा लिए गये निर्णय को समाज के सभी सदस्य स्वीकार करते हैं उनमें आपसी विरोध की भावना नहीं होती है। विवाह के लिए तारीख निश्चित करना हो अथवा अन्य सामाजिक नियमों का निर्माण समुदाय के सभी सदस्य मिल कर करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में देखा गया कि जिस दिन अक्की का त्यौहार था उस दिन सभी समुदाय के सदस्यों ने मिलकर सर्वसम्मति से समाज के लिए कुछ नियम बनाए जैसे - सभी समुदाय के लोग सुबह 4 बजे से शाम 4 बजे तक ही काम करेंगे, जो भी समुदाय सदस्य नागर से खेती करेगा उसे 350 रु, और जो नागर के बैगरे खेती करेगा उसे 100 रु समाज को देना पड़ेगा, महुआ कि शराब 120 रु में एक बोतल बेचेंगा। उसी तरह उनकी नयी पीढ़ी द्वारा अपने भविष्य के लिए लिए गए निर्णय को भी स्वीकार्यता मिलती है। जैसे अपने जीवनसाथी का चुनाव, अपने रूचि के अनुसार कार्य उनपर उनकी रूचि के विपरीत कार्यों को करने के लिए दबाव नहीं डाला जाता है। माता पिता और समुदाय के लोग उसके लिए गये निर्णय को स्वीकार करते हैं। उसे मानसिक तनाव नहीं दिया जाता है उदाहरण स्वरूप समुदाय द्वारा युवक – युवतियों को अपनी पसंद के जीवन साथी से विवाह को स्वीकार्यता प्रदान की जाती है। पढ़ाई के लिए भी माँ बाप बच्चों पर किसी प्रकार का कोई दबाव नहीं बनाते हैं यह बच्चों की इच्छा पर निर्भर है कि वो अपने लिए क्या चाहता है। उनपर किसी भी बात को लेकर अत्यधिक जोर नहीं दिया है और वे अपनी रूचि के अनुसार कार्य करते हैं।

6 समस्या समाधान – बैगा समुदाय व्यक्तिगत हो या सामाजिक सभी समस्याओं को मिलकर सुलझाते हैं। समस्या समाधान करते समय समस्या के दोनों पक्षों पर विचार किया जाता है। तत्पश्चात ही निर्णय लिया जाता है। संबंधों में खटास आने पर भी समुदाय के सदस्य आपस में बैठकर दोनों पक्षों की बात सुनकर सही या गलत का निर्णय लेते हुए समस्या का समाधान करते हैं। अगर कुछ व्यक्तियों का आपसी मतभेद होता है तो समुदाय के सदस्य बैठकर बातचीत द्वारा सुलह करवाते हैं। जिससे उनके आपसी संबंध ठीक हो जाये। बैगा बताते हैं कि समुदाय में कोई भी अपराध करता है तो बैगा समुदाय उसे अपने समुदाय और गाँव से बाहर कर देते हैं जब तक उस व्यक्ति को अपराध बोध नहीं हो जाता और समुदाय से माफ़ी नहीं मांग लेता तब तक उसे समुदाय में शामिल नहीं किया जाता है।

इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक तरीके से भी विभिन्न समस्याओं को सुलझाया जाता है। समुदाय में औषधियों के साथ- साथ तंत्र मंत्र के माध्यम से भी इलाज किया जाता है जो व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थ बनाये रखता है। समुदाय में ही देखने को मिला कि वैद्य बैगा के पास समीप के गाँव से आकर एक व्यक्ति बैठा है जो बैगा समुदाय का नहीं है पूछने पर उस व्यक्ति ने जानकारी दी कि वो अपने बच्चों के इलाज के लिए यहाँ आया है। उसका

बच्चा कई महीनों से बीमार चल रहा था कई जगह आधुनिक इलाज करवाने के बाद भी उसे पूरी तरह आराम नहीं मिला। ततपश्चात वह बैगा समुदाय के पास परंपरागत औषधीय चिकित्सा करवा रहा है जिससे उनके बच्चों को आराम भी हुआ है। बैगा मंत्रोपचार द्वारा झाड़ फूक करके दवा देते हैं। जिसमें बाहर की बुरी बला भी ठीक हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र में शोधार्थी ने देखा कि वैद्य बैगा एक सूप में कुछ चावल को लेकर हिलाते हुए मंत्र अपने मन में बोलता है तथा उसके पश्चात ही जड़ी बूटी देता है। विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भी विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जाता है साथ ही परिवार, बच्चों और समुदाय पर आनेवाली परेशानियों को दूर करने हेतु सामूहिक रूप से प्रार्थना भी की जाती है।

7 प्रभावी संचार – बैगा समुदाय में मौखिक संचार प्रभावी होता है। समुदाय के सदस्यों में एक दूसरे के प्रति डर एवं झिजक नहीं होती है। स्वतंत्र वातावरण होता है जिसमें छोटे और बड़े दोनों को ही सम्मान है। लड़के एवं लड़कियों को भी समाज में एक समान स्थान प्राप्त है। अतः समुदाय के सदस्य आपस में एक दूसरे से अपनी बातों को स्पष्ट रूप से कह पाते हैं। अपने आपको समाज के सदस्यों के समक्ष अभिव्यक्त करने की क्षमता उनमें है।

समुदाय के अन्य सदस्यों को औषधीय ज्ञान देना हो या तंत्र- मंत्र सिखाना हो मौखिक संचार के माध्यम से ही यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी प्रदान किया जा रहा है। और आज भी यह ज्ञान समुदाय में विद्यमान है। समुदाय में किसी समस्या का समाधान करना हो या समुदाय में किसी भी प्रकार का निर्णय लेना हो मौखिक संचार के माध्यम से ही संभव होता है क्योंकि समुदाय में सभी कार्य सामूहिक रूप से ही सम्पन्न होते हैं अतः मौखिक संचार की भूमिका महत्वपूर्ण है।

बैगा समुदाय में विवाह में सभी रिश्तेदारों को पीले चावल दरवाजे पर छिड़क कर विवाह में शामिल होने का न्योता दिया जाता है। वही मृत्यु होने की सूचना दरवाजे पर सफेद चावल छिड़क कर दी जाती है। सभी सदस्य सूचना प्राप्त होने मात्र से मृतक के परिवार में पहुँच जाते हैं। विवाह में प्रत्येक रस्म में समुदाय के सभी सदस्यों की उपस्थिति होती है। जिसकी सूचना उन्हें मौखिक रूप से ही दी जाती है और समय पर सभी सदस्य उपस्थित रहते हैं यह समुदाय के बीच प्रभावी संचार को बताता है।

आजकल आधुनिक उपकरण माईक के माध्यम से गाँव में सूचना दी जाती है। मौखिक संचार के माध्यम से समुदाय में दिनप्रतिदिन की समस्याओं और आपसी संबंधों को सामूहिक रूप से सुलझाया जाता है। अक्की के त्यौहार के दिन देखने को मिला कि मौखिक रूप से समुदाय के लिए बनाये गए नियम को सभी को सुनाया जा रहा था। बैगा बताते हैं कि वह जब भी शिकार करने जाते हैं मौखिक रूप से शिकार को भ्रमित कर ही उसका शिकार करते हैं। बैगा समुदाय के पास औषधीय ज्ञान अत्यधिक होता है परंतु उनके पास कोई लिखित दस्तावेज नहीं है वह सदियों से मौखिक रूप प्रभावी संचार के माध्यम से अपने आनेवाली पीढ़ी को इसकी शिक्षा देते आ रहे हैं और इसके साथ ही तंत्र-मंत्र का ज्ञान भी मौखिक रूप से ही देते आ रहे हैं।

8 तनाव से निपटना- बैगा समुदाय भविष्य को लेकर चिंता नहीं करता और न ही अपने बच्चों को किसी प्रकार का तनाव देता है। जंगल में रहते हुए वे जीवन यापन एवं सामुदायिक जीवन हेतु विभिन्न जीवन कौशल में दक्ष होते हैं। वे अपने बच्चों को बचपन से ही जीवन जीने का तरीका सिखाते हैं। बैगा कहते हैं कि जंगल से उनका भरण पोषण हो जाता है और उन्हें इससे ज्यादा की लालसा नहीं होती है और यही प्रवृत्ति हमारे बच्चों में भी है। बैगा समुदाय में देखा गया कि जीवन जीने के लिए प्रकृति से जितना जरूरी हो उतना ही लेते हैं। उनका उद्देश्य कभी आर्थिक लाभ कमाना नहीं रहा है। बैगा समुदाय वनोपज संग्रह, लकड़ी काटना और शिकार कर अपनी जीविका का निर्वहन करते हैं और वनों

से प्राप्त महुआ से महुआ पेय भी बनाते हैं तथा आवश्यकता से अधिक होने पर उन्हें बाजार में बेच भी देते हैं। यही कार्य उनके बच्चों बड़े होकर करते हैं। उनमें बेरोजगारी का तनाव नहीं दिखाई देता है जो भी जंगल से मिलता है अपने उपयोग के लिए रखकर बाकि बाजार या व्यवसायी को बेच देते हैं। बैगा समुदाय के परिवार में किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो पूरा समाज उसके साथ होता है। इस प्रकार समुदाय की मान्यताएं भी तनाव से निपटने में सहायक सिद्ध होती हैं। जैसे बैगा समुदाय में मृत्यु के पश्चात उस व्यक्ति का जन्म होगा यह मान्यता है। बैगा समाज पुनर्जन्म को मानते हैं। समुदाय में सामान्य बातचीत करने पर एक बैगा बताते हैं कि उनकी बेटी उनकी माँ का पुनर्जन्म है। उनसे पूछने पर कि आपको कैसे पता चलता है कि यह आपकी माँ है या परिवार में जन्म लेनेवाला व्यक्ति उनका पूर्वज है तब बैगा बताते हैं कि जिस दिन जिस समय उनके पूर्वज की मृत्यु हुई है उसी दिन (तिथि) उसी समय अगर परिवार में किसी बच्चों का जन्म होता है तो यह माना जाता है कि उनके पूर्वज उनके बच्चों के रूप में उनके पास वापस आ गए हैं। अगर पूर्वज के शरीर में किसी स्थान पर जन्म से निशान है और वही निशान जन्म लिए हुए बच्चों के शरीर पर उसी जगह होता है तब भी माना जाता है कि वह उनके पूर्वज का पुनर्जन्म है।

9 भावनाओं से निपटना—बैगा समुदाय के लोग अत्यंत दुख और मुसीबत में होने पर भी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, संतुलित रहते हैं और भविष्य की जरा भी चिंता नहीं करते। बेटी के लिए वर का चयन हो या प्रियजन की मृत्यु उसे सहजता से स्वीकार करते हैं। जरा भी विचलित नहीं होते जीवन की वास्तविकताओं को स्वीकार करने की उनमें सहज क्षमता होती है। सभी लोग मिलकर समूहिक रूप से सभी समस्याओं का हल करते हैं और कठिनाइयों में जरा भी विचलित नहीं होते हैं। उन्हें अपने देवी देवताओं पर अखंड विश्वास होता है। और ऐसा मानते हैं कि जो भी हो रहा है वह सब ईश्वर की मर्जी से हो रहा है। इस प्रकार वे आध्यात्मिक शक्ति से जुड़कर अपना जीवन सहजता से यापन करते हैं। समुदाय में एक दंपति की दोनों संतानों का देहांत हो गया था किन्तु वे दोनों बड़े ही स्थिर मन से बिना विचलित हुए समुदाय के विभिन्न क्रिया कलापों में भाग लेते हैं और अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

10 -रचनात्मक सोच - रचनात्मक सोच एक ऐसा कौशल है जिसे प्रत्येक कार्य हेतु आवश्यक माना जाता है फिर चाहे वह जंगल से वनोपज संग्रहण हो, मछली पकड़ना हो, लकड़ी काटना हो, शिकार करना हो, बांस से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण हो या, वनस्पतियों की पहचान हो, तंत्र मंत्र हो, वनौषधि से उपचार हो या वनोपज का संरक्षण हो सभी कार्यों में रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। जनजाति समुदाय जो भी करता है वह बड़ी ही कुशलता से करता है मछली पकड़ने के लिए वह विविध प्रकार के जाल व उपकरण तैयार करता है। उथले पानी के लिए, गहरे पानी के लिए, स्थिर पानी के लिए, बहते हुए पानी के लिए इस प्रकार एक ही कार्य हेतु वह विभिन्न तरीकों से विचार करता है और उसका समाधान ढूँढता है। इसी तरह शिकार हेतु भी वह विभिन्न प्रकार के तीरों का निर्माण करता है। बांस से विभिन्न प्रकार की उपयोगी वस्तुओं को हाथ से बनाने में वह दक्ष होता है। यह समुदाय सदैव समूह में कार्य करता है किसी भी समस्या के समाधान हेतु अलग अलग तरीकों पर विचार करता है।

निष्कर्ष:

बैगा जनजाति प्राकृतिक परिवेश में सदियों से अपना जीवन व्यतीत कर रही है। बैगा समुदाय में बच्चे जीवन जीने की कला एवं विभिन्न जीवन कौशल को अपनी संस्कृति, विश्वास और परंपराओं के माध्यम से सीखते हैं। इनका

जनजाति जीवन कौशल : बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में

कोई दस्तावेजीकरण नहीं है। ये कला कौशल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अनौपचारिक रूप से अनायास ही स्थानांतरित हो रहे हैं। उनका प्रकृतिक परिवेश एवं समूहिक जीवन उन्हें विभिन्न जीवन कौशलों में निपुण बनाता है आज भी वे जीवन यापन हेतु विभिन्न परंपरागत जीवन यापन के कौशलों - जैसे मछली पकड़ना, शिकार करना, जंगलो से फल, फूल एकत्र करना, बांस से टोकरी, सूप और झाड़ू बनाना, वनौषधि की जानकारी एवं परंपरागत उपचार में निपुण हैं। साथ ही नेतृत्व क्षमता, सामाजिक व्यवहार, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, भावनात्मक संतुलन, आत्मजागरूकता जैसे जीवन कौशलों में भी यह समुदाय निपुण है। किन्तु वर्तमान बदलते परिवेश में जहां बाहरी समाज का हस्तक्षेप इनके बीच बढ़ रहा है साथ ही बिचौलिये इन्हे तरह तरह के लालच में फंसा रहे हैं एवं औपचारिक शिक्षा के प्रभाव के कारण इनके मन में परंपरागत ज्ञान एवं कौशल के प्रति रुचि कम होती जा रही है एवं इनमें जीवन कौशलों का महत्व कम होते जा रहा है। विभिन्न कौशलों में निपुण यह समुदाय आज मजदूरी कर अपनी आजीविका का निर्वाह कर रहा है उनका जंगल आना जाना कम हो रहा है क्योंकि वन कानून के तहत उन्हें सीमित अधिकार प्राप्त हैं। जंगलो में वनौषधियों के वृक्षों की भी कमी हो रही है क्योंकि इमारती लकड़ी पर शासन का ज्यादा ध्यान है। इस प्रकार जनजाति समुदाय का वनौषधि संबंधी ज्ञान भी विलुप्त होने की कगार पर है। आज की शिक्षित युवा पीढ़ी जीवन कौशलों के अभाव में इधर उधर भटक रही है। बच्चों में अपराधी प्रवृत्ति विकसित हो रही है, और वे गलत रास्ते को अपना रहे हैं क्योंकि आज की शिक्षा उन्हें जीवन जीने का कौशल नहीं देती है। परिवार भी आज संयुक्त नहीं रहे हैं, जिससे परिवारों में भी बच्चों को यह ज्ञान प्राप्त नहीं हो पा रहा है। आज युवा पीढ़ी के सामने भविष्य को लेकर चिंता अवसाद और तनाव बना हुआ है यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी आज जीवन कौशल विकास की शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान देने की बात की जा रही है। क्या जनजाति समुदाय को भी विकास के नाम पर उनके परंपरागत ज्ञान एवं जीवन कौशलों से दूर कर हम उन्हें भी इसी रास्ते पर लाना चाह रहे हैं? जहां आज की शिक्षित युवा पीढ़ी खड़ी है। आवश्यकता है कि जनजाति समुदाय के विकास और शिक्षा में उनके जीवन कौशल को स्थान मिले और शिक्षा के माध्यम से वे अपने परंपरागत ज्ञान और जीवन मूल्यों को साथ लेकर आगे बढ़ें ताकि वे अपने परंपरागत ज्ञान को सम्मान दे सकें।

संदर्भ सूची:

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/2020/MAITHILI.pdf
2. बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण प्रतिवेदन आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण (2020) छत्तीसगढ़, परिषद् नवां रायपुर.
3. भरत, श्री एवं कुमार, के. वी. के. (2016) मनो चिकित्सा विभाग, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य तथा विज्ञान संस्थान, निम्हांस, बेगलुरु -29, भारत (81), 3 -36
<https://nimhans.ac.in/wp-content/uploads/2020/02/Jeevan-Koushal-Ka-Vikas-Facilitators-Manual-Level-I.pdf>
4. करिकुलम एंड गाइडलाइन्स फॉर लाइफ स्किल (जीवन कौशल) 2.0 (2023) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली https://www.ugc.gov.in/pdfnews/4371304_LifeSkill_JeevanKaushal_2023.pdf
5. जीवन कौशल हेतु पाठ्यक्रम (2019) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
<https://www.ugc.gov.in/e-book/JEEVAN%20KAUSHAL%20HINDI.pdf>

6. Life skill education for children and adolescents in school, Programme on Mental Health World Health Organization, Geneva 1997
https://iris.who.int/bitstream/handle/10665/63552/WHO_MNH_PSF_93.7A_Rev.2.pdf
7. जीवन कौशल शिक्षा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ,राजस्थान अजमेर
<https://rajeduboard.rajasthan.gov.in/books-2019/books-2020/cls11/JiwanKaushal.pdf>
8. कलाम थॉमस (2020) किशोर शिक्षा के संदर्भ में जीवन कौशल,इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली.162-200 <https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/80319>

